jewan yatra1:arunjaity.qxd 9/26/2010 10:26 PM Page 40

उद्योगपति
मुरली वाडिया
के साथ

पति-पत्नी अपने भरण-पोषण का न्यूनतम जीवन स्तर अपनाकर अपना पूरा समय सर्वांगीण विकास कार्यों में लगाते हैं। अकेले चित्रकूट क्षेत्र में 35 समाज शिल्पी दम्पति कार्यरत हैं।

चित्रकूट जिले से नानाजी के रचनात्मक कार्य की सुगन्ध देश-विदेश में फैली, नानाजी के पुराने सहयोगी और मित्र अटल विहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री के नाते वहां गये और सार्वजनिक भाषणों में समय न गंवाकर उन विकास कार्यों को अपनी आँखों से देखा। भारत सरकार ने नानाजी को 23 मार्च 1999 में पद्म विभूषण सम्मान से अलंकृत किया और फिर समाजसेवी के नाते राष्ट्रपति ने 22 नवम्बर 1999 को उन्हें राज्यसभा के लिए नामांकित किया। नानाजी ने अपनी सांसद निधि की एक-एक पाई को चित्रकूट के विकास में लगाया। सांसदों का वेतन-भत्ता बढ़ाने का विरोध किया। उसमें असफल रहने पर अपने हिस्से की बची हुई राशि को प्रधानमंत्री सहायता कोश में भेंट कर दिया। 6 अक्टूबर 2005 को राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने चित्रकूट यात्रा की, जमीन पर ग्रामवासियों के साथ बैठकर पत्तल-दोनों में भोजन करके समरसता का उदाहरण प्रस्तुत किया। चित्रकूट से लौट कर वे वहाँ के रचनात्मक प्रकल्पों के प्रचारक ही बन गये हैं। अनेक विश्वविद्यालयों ने नानाजी को डी. लिट. की मानद उपाधियाँ देकर राष्ट्र के सर्वांगीण

तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल विहारी वाजपेयी के साथ चित्रकूट में

चित्रकूट के मझगंवा में डीआरआई के कार्यक्रम में वनवासियों के साथ भोजन करते तत्कालीन राष्ट्रपति डा. एपीजे अब्दुल कलाम

विकास में उनके रचनात्मक योगदान को मान्यता दी है पर नानाजी उन सबसे ऊपर उठ चुके थे। 94 वर्ष लम्बे जीवन काल में राष्ट्र-जीवन के अनेक क्षेत्रों में अपने कर्तृत्व का डंका बजाया। दक्षिण में वीड से उत्तर में गोंडा जिले तक विकास के अनेक रचनात्मक प्रकल्पों की श्रृंखला खड़ी की, किन्तु उनमें कहीं पर भी नानाजी का नाम नहीं है, नानाजी का चित्र नहीं है, हर जगह उन्हीं के चित्र और नाम हैं जिनसे उन्होंने जीवन में कभी भी प्रेरणा पायी। डॉ. हेडगेवार, गोलवलकर 'गुरुजी', दीनदयाल उपाध्याय, जयप्रकाश जी और प्रभावती जी आदि आदि।

विश्राम करना तो नानाजी ने सीखा ही नहीं। अपने ध्येयवाक्य 'हम अपने लिये नहीं, अपनों के लिये हैं और अपने वे हैं जो पिछड़े, उपेक्षित और पीड़ित हैं' को चरितार्थ करने के लिए वे अपने जर्जर शरीर को अन्त तक रगड़ते रहे। कई वर्षों तक वे भीष्मपितामह की तरह शय्यासीन रहे। अपने पैरों पर न पूरी तरह खड़े हो सकते थे, न आँखों से स्पष्ट देख सकते थे, न कानों से पूरी तरह सुन सकते थे, किन्तु उनका दिल और दिमाग हर क्षण समाज की चिन्ता करते रहे। वे मुँह से बोलकर युवाओं के नाम पाती लिखाते रहे और अन्त में 1997 में स्वप्रेरणा से उन्होंने अपनी देह को शोध-कार्य के लिये समर्पित करने की वसीयत लिख दी।

आइए, इस प्रसिद्धि पराङ्मुख राष्ट्रऋषि दधीचि के प्रति श्रद्धापूर्ण नमन करें और उनकी अधूरी साधना को आगे बढ़ाने का संकल्प लें। ■